International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(2): 94-97
www.educationjournal.info
Received: 11-07-2023
Accepted: 15-08-2023

धीरेन्द्र सिंह चौहान
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी
प्राचार्य, ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
धीरेन्द्र सिंह चौहान
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

धीरेन्द्र सिंह चौहान, डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12–12 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1296 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं का शिक्षा में समागम होकर प्राप्त होने वाले निष्कर्षों में उसके आन्तरिक संवेग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जो बालक संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते है, उनकी बुद्धिलब्धि भी उच्च होती है। वहीं संवेगात्मक रूप से कमजोर बालक बुद्धिमान होते हुए भी अपनी क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाता।

कूटशब्दः रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना
वर्तमान समय में देश के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विकास में शिक्षा न केवल महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है बल्कि राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ बनाती है। मानव की शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति में न्याय संगत तथा तर्क संगत सोचने की क्षमता का विकास करती है। व्यक्ति को उत्तम शिक्षा संयोगवश प्राप्त नहीं हो जाती है बल्कि उसके लिए उचित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास करना आवश्यक होता है। वर्तमान में बहुधा शिक्षार्थीयों के शिक्षा में घटिया प्रदर्शन की जिम्मेदारी अध्यापकों व विद्यालय प्राधिकारियों पर डाल दी जाती है। हमारे समाज में अधिकतर लोग अपने बालकों की शिक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान देते हुए प्रतीत नहीं होते हैं।

कुछ अभिभावक अपने बालकों के शैक्षिक प्रदर्शन के प्रति त्रुटिपूर्ण अवधारणा बनाएं रखते हैं तथा बालकों को किसी भी प्रकार का पथ प्रदर्शन प्राप्त नहीं कराते हैं। बालकों को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सम्भालने की आवश्यकता है ताकि उसमें वांछनीय व्यवहारगत गुणों का विकास हो सके तथा उनके व्यक्तित्व का उत्तम विकास हो। बहु बुद्धि का अभाव बालकों को विभिन्न क्षेत्रों तथा विभिन्न कार्य कौशलों में निम्नता को प्रदर्शित करता है तथा बालक के भविष्य को अंधकारी युक्त बनाता है।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं को प्रभावी ढंग से देखने, समझने, प्रबंधित करने और व्यक्त करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एक प्रकार का मूल्य और कौशल है जो सिविल सेवकों के लिए आवश्यक है क्योंकि इसमें स्वयं की भावनाओं को पहचानना और विनियमित करना शामिल है, साथ ही साथ दूसरे की भावनाओं को समझने और उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाता हैं।

संवेगात्मक बुद्धि मनुष्य का एक बौद्धिक गुण है। परन्तु उसका अधिकतर व्यवहार बुद्धि से नहीं बल्कि संवेगों से परिचालित होता है। संवेग मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है व व्यक्ति के बाह्य व्यवहार को अत्यधिक प्रभावित करते है। उसकी मानसिक स्थिति व कार्यक्षमता को प्रभावित करते है। संवेगों के उदय होने पर व्यक्ति में अतिरिक्त शक्ति का संचार होता है। जिससे व्यक्ति को विभिन्न कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार संवेग वे भावनाएँ है जिसमें मनोवैज्ञानिक व संज्ञानात्मक दोनों तत्व होते है। संवेगात्मक बुद्धि दो प्रत्ययों से मिलकर बना है, संवेग और बुद्धि। संवेग का अर्थ है उद्वेलन की अवस्था एवं बुद्धि का अर्थ है विवेक पूर्ण चिन्तन की योग्यता। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि एक आन्तरिक योग्यता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति में संवेगों को महसूस करने, समझने व उनका प्रभावपूर्ण नियंत्रण करने की क्षमता का विकास होता है।

गोलमैन के अनुसार, "संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के स्वयं के एवं दुसरों के संवेगों को पहचाननें की वह क्षमता है जों हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को स्वयं में व अपने सम्बन्धों के दौरान भली प्रकार से समझने में सहायक होती है। एस. हेन के अनुसार, संवेगात्मक बुद्धि एक मानसिक क्षमता है जिसके साथ हम जन्म लेते है, जो हमें संवेगात्मक रूप में संवेदनशीलता तथा हमारी क्षमताओं की संवेगात्मक समझ प्रदान करती है। प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि प्रत्यय का उपयोग किया है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है शैक्षिक व उपलब्धि। यहां शैक्षिक अर्थात् निश्चित सत्र में प्राप्त किया गया पुस्तकीय ज्ञान व उपलब्धि का अर्थ सकारात्मक परिवर्तनों से है। अर्थात् एक निश्चित समय में निश्चित पाठ्यवस्तु में प्राप्त उपलब्धि ही शैक्षिक उपलब्धि है। सुपर डी.ई. के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा है तथा उपलब्धि क्या है से है।" बेले के अनुसार, "शैक्षिक निष्पति ग्रहण किया गया ज्ञान है।" यदि एक निश्चित समय में हम एक विषय या समूह को किसी प्रकार का प्रशिक्षण दे तो उस प्रशिक्षण से उन्हे कुछ ज्ञान या कौशल की वृद्धि होती है उसे उपलब्धि कहते है। किसी विद्यार्थी के विद्यालयों विषयों में प्राप्त ज्ञान का पता एक लिखित प्रमाण–पत्र के रूप में प्राप्त होता हैं जो विद्यार्थी विषयक कार्य के बारे में सूचित करता है। यह प्राप्त ज्ञान एव विकसित कैशल, दैनिक मासिक एवं वार्षिक परीक्षाओं में प्राप्त अंको से ज्ञात होता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि विद्यार्थी किसी विशिष्ट विषय में या क्षेत्र में किस प्रकार अध्ययन करे जिससे कि वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर पाये। इसके लिए एक कुशल अध्यापक नई विधि का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध विषय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि विभिन्न मनोवैज्ञानिक के कारकों की स्थिति की सार्थकता की पहचान करना है। प्रस्तुत अध्ययन से उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति ज्ञात हो सकेगी।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12–12 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1296 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test & Correlation आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं अद्धवार्षिक परीक्षाफल के परिणामों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि और संबेगात्मक बुद्धि परीक्षण के लिए डॉ. एस.के. मंगल व डॉ. शुभा मंगल द्वारा निर्मित प्रपत्र का प्रयोग किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, आर.ए. (2008)[1], अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[2], अपाध्याय, भागर्व एवं त्यागी (2007)[3], कपिल, एच.के. (1996)[4], भार्गव महेश (2006)[5], राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010)[6], पाठक, पी.डी. (1998)[8], सिंह, नागेन्द्र प्रताप एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[9], बालमुकुन्द, एम एवं गौधमन, के. सलेम (2009)[10] ने शोध

विधि एवं संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले षायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध का सांख्यिकीय मान

चर (Variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक– आर्थिक स्तर	1296	0.783	1294

*0.05 स्तर पर 'r' का मान = 0.062

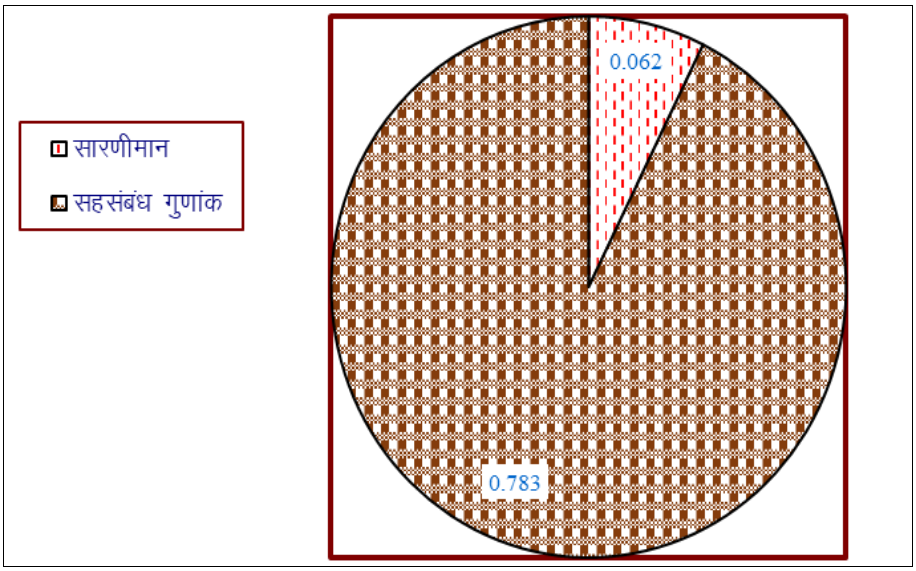

आरेख 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध का आरेखीय निरूपण

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध 'r' = 0.783 एवं df 1294 है। यह 'r' तालिका के 0. 05 से अधिक है। इसलिए 'r' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्याार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः यह परिकल्पना निरसित होती है।

सारणी 2: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	छात्र	648	49.07	0.71	2.58	1.96	0.401
2.	छात्राएँ	648	49.06	0.67			

df = 1294

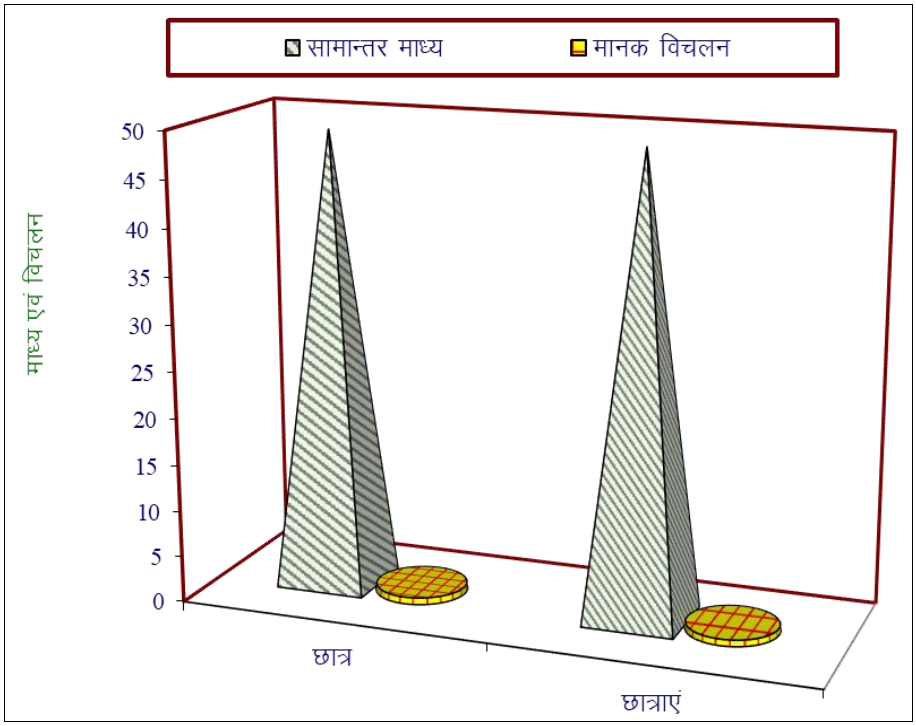

आरेख 2: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का आरेखीय निरूपण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान क्रमशः 49.07 एवं 49.06 है। तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 0.71 एवं 0.67 प्राप्त हुआ है। इनका df 1294 है। गणना से 't' का मान 0.401 प्राप्त हुआ है। जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है अत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। प्रस्तुत शोध में निष्कर्षो की विवेचना की जाये तो शैक्षिक उपलब्धि व संवेगात्मक बुद्धि आदि चरों के मध्य सहसम्बन्ध व तुलना की जाये तो अधिकांश प्रश्नों पर सार्थक प्रभाव व अन्तर दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध के समाज के लिए भी महत्वपूर्ण निहितार्थ है। विद्यालय ही समाज के लिए भावी नागरिक तैयार करता है। यदि विद्यालय अपने कर्तव्यों के लिए जवाबदेह नही होगा तो वह अच्छें नागरिक विकसित नही कर सकता। यदि शिक्षक वर्ग अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित होंगे तथा आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होंगे तभी वे अपने छात्रो के बौद्धिक विकास के साथ साथ सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास करने में अपना योगदान प्रदान कर सकेंगे। विद्यालय में होने वाली सहशैक्षिक गतिविधियों के द्वारा उनमें समायोजन, संवेगात्मक विकास व संस्कार निर्माण किया जा सकता है। जो समाज के हित मे भी होगा। विद्यालय में ही विधार्थी रूपी भावी नागरिकों के संवगों का प्रबन्धन कर उन्हे नैतिक व सामाजिक, व्यवसायिक व राष्ट्र के प्रति समर्पित नागरिक बनाने का प्रयास किया जा सकता है। जिससे समाज अपराधमुक्त हो प्रगति कर सके।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, आर.ए. (2008) : "शिक्षा अनुसंधान" आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
2. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. उपाध्याय, भागर्व एवं त्यागी (2007) : "अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण" अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर.
4. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
5. भार्गव महेश (2006) : "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट आगरा.
6. राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010) : अनुसंधान परिचय. आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
7. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
8. सिंह, नागेन्द्र प्रताप एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021), "सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन", International Journal of Applied Research. 2021;7(6):175-178.
9. बालमुकुन्द, एम एवं गौधमन, के. सलेम (2009), संवेगात्मक बुद्धि, आवश्यकता एवं महत्व, साइको–लिन्गुआ, 38(2), पृ. 117.